International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-01-2020; Accepted: 08-02-2020; Published: 05-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 34-35

लोक साहित्य अर्थ, परिभाषा एवं विविध रूप

डॉ मंजुला चौहान
हिंदी विभागाध्यक्ष, अक्कमहादेवी महिलामहाविद्यालय, बागलकोट, कर्नाटक, भारत

प्रस्तावना

लोक साहित्य असल में हमारी संस्कृति की और प्राचीनता की सच्चा दर्पण। वैसे तो इतने सालों में कहां क्या घटा है ? कब घटा है ? यह साहित्य के द्वारा ही पता चलता है। पहले कुछ लेखनी नहीं थे या उसे लिख कर नहीं रखते थे पर फिर भी बहुत कुछ साहित्य संग्रहित हुआ, जिसकी कोई नहीं थे वही लोक साहित्य के रूप में प्रचलित हुआ। यह साहित्य पुरातन काल के संस्कृति, शिक्षा, खानपान, रहन-सहन रीति-रिवाज आदि की पहचान कराता है। आज हमारे साहित्य की दुनिया में लोक साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है।

भारतीय साहित्य में लोक शब्द बहुत प्राचीन काल से प्रयुक्त होता चला आ रहा है लोक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'लोकृदर्शने' धातुमें 'धञ्' प्रत्यय जोड़ने से हुई है। लोकृ दर्शने धातु का अर्थ है 'देखना' अतः लोक शब्द का मूल अर्थ हुआ- देखने वाला परंतु व्यवहार में लोक शब्द का प्रयोग संपूर्ण जन मान सके लिए होता है।

- ऋग्वेद 'लोक' शब्द का प्रयोग 'जन' के पर्यायवाची शब्द के रूप में किया गया है।
- पुरुष सूक्त में लोक शब्द का प्रयोग 'स्थान तथा 'जीव' शब्दों के अर्थ को व्यक्त करने के लिए किया गया है।
- अथर्व वेद में लोक शब्द से दो लोकों की स्थिति का बोध कराया गया है ये दो लोक है 'पार्थिव' एवं 'दिव्य' * उपनिषदों में भी लोक शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर उपलब्ध होता है जैसे जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण में लोक शब्द की व्याख्या विविध प्रकार से विस्तार लिए हुए, प्रत्येक वस्तु में निहित और प्रयास करने पर भी अनुपलब्ध के रूप में की गई है।
- महाभारत में और श्री मद्भगवद्गीता आदि में भी लोक शब्द का ही प्रयोग हुआ है।
- पाणिनी, वररुचि और पतंजलि प्रभृति जी वयाकरणों में भी लोक शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया है।
- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में भी लोक शब्द का प्रयोग सटीक रूप में किया गया है नाट्यशास्त्र में लिखते हैं इस शास्त्र की रचना लोक मनोरंजनार्थ की जा रही है।

लोक शब्द काव्युत्पत्तिपरक अर्थ है देखने वाला। 'शब्दकोश' में इस शब्द के अर्थ मिलते हैं स्थान बोधक, संसार, प्रदेश या क्षेत्र, जन या लोग, समाज, प्राणी तथा यश आदि।

समग्र रूप रुप में देखा जाय तो' लोक 'शब्द के व्याख्या जन समूह के लिए किया जाता है जो साज-सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता, शिक्षा एवं परिष्कार आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों से युक्त होता है। यह शब्द वैदिक काल से प्रयोग होता हुआ आ रहा है।

हिंदी साहित्य में भी परंपरागत रूप में सामान्य जनता के अर्थ में लोक शब्द का प्रयोग किया जाता आ रहा है। हिंदी साहित्य के शोधार्थियों ने अपने शोध प्रबंधों में यह स्पष्ट कहा प्रमाणित किया है कि हिंदी साहित्य में वीरगाथा काल से ही इस शब्द का प्रयोग पाया गया है गोस्वामी तुलसीदास शब्द का प्रयोग सर्वथा सार्थक रूप में किया है रामचरितमानस में 'लोक 'और 'वेद' शब्दों का प्रयोग करके महाकवि तुलसी ने लोक की सत्ता को स्वतंत्र रूप में स्थापित कर दिया है

लोकहच वेद सुसाहिबा रीती।

विनय सुनत पहिचानत प्रीती ।।

ऊपर हमने देखा कि लोक शब्द अर्थ क्या है और कब से उसका उपयोग होते हुए आ रहा है अब हम देखेंगे लोक साहित्य के विभिन्न परिभाषाएं- सामान्यतः साहित्य के क्षेत्र में दो शब्द प्रचलित हैं – शिष्ट साहित्य तथा लोक साहित्य। लोकगीत, लोककथाएं, लोकगाथाएं, तथा गीत धर्म गाथाएं, लोकनाट्य, नौटंकी, रासलीला आदि सभी लोक साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

लोक साहित्य का जन्म साहित्य शब्द के पूर्वलोक लोक अभिधान लगाने के बाद उसका अर्थ होगा लोक का साहित्य लोक का अर्थ जनता जनार्दन द्वारा लिया जाता है इसलिए लोक साहित्य का बोल ऐसे साहित्य से होता है जिसकी रचना जनता से या जनता के द्वारा की गई हो। एक विशिष्ट व्यक्ति की रचना न होने का तात्पर्य यही हो सकता है कि जिस साहित्य की रचना एक जन समूह द्वारा की जाती हो उसे ही लोक साहित्य कहा जाना चाहिए, जो भावनाएं हर्ष, विषादशोक, प्रेम, विश्वास आदि होती है जो सामूहिक गीत, कथा, संवादो द्वारा होती है। एक किसी व्यक्ति ने पंक्ति की मौखिक रचना की होगी तो दूसरे व्यक्ति ने उसमें एक और पंक्ति जोड़ दी तीसरे ने तीसरी पंक्ति इस तरह वह प्रसंग गीत कथा का रुप धारण करता है। इसी परवर्ती पीढियों ने भी इसमें संशोधन किए होंगे और रचना सहयोग से जो साहित्य प्रकाश में आया है लोक साहित्य की श्रेणी में आ गया। आज आधुनिक युग में लोक साहित्य शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द फोक लिटरेचर के पर्याय के रूप में भी लिया जा रहा है जिसका सामान्य अर्थ है लोक का साहित्य जिसके कई अर्थ निकलते हैं- उसका साहित्य जो सभ्यता की सीमा से बाहर है और सभ्य समाज में जिनका स्थान नहीं है। लोक साहित्य ग्रामीण जीवन या ग्रामीण प्रदेश की साहित्य से है जो ग्रामीण साहित्य है।

लोक साहित्य की परिभाषा

लोक साहित्य की उपयुक्त विशेषताओं के आधार पर कोई ऐसी पूर्व तथा सर्वमान्य परिभाषा विद्वानों द्वारा नहीं की गई है जिसके आधार पर लोक साहित्य की कोई पहचान स्थापित की जा सके फिर भी यहां कुछ विद्वानों के मत प्रस्तुत किए गए हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ऐसा मान लिया जा सकता है- "जो चीजें लोक चित्र से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आंदोलित, चालित और प्रभावित करती हैं वे ही लोक साहित्य, लोकशिल्प, लोकनाट्य, लोककथा आदि नामों से पुकारे जा सकती है।"

लोक शब्द के लिए डॉ सत्येंद्र कहते है - "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है, जो अभीजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है; और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।"

रवींद्र भ्रमर के अनुसार- "लोक साहित्य लोक मानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है यह बहुदा अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ाता रहता है। इस साहित्य के रचयिता का नाम

अज्ञात रहता है। लोग का प्राणी जो कुछ कहता सुनता है ऐसा जमुंह की वाणी बनाकर और समूह में घुल मिलकर ही कहता है संभवतः लोक साहित्य लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिंब भी होता है अभिजात या लिखित साहित्य के प्रतिकूल लोक साहित्य परमार्जित भाषा शास्त्रीय रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहता है भाषा के माध्यम से लोग चिंता की अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है। एक परिभाषा देने का प्रयास किया है आदि मानव की लोक साहित्य है हमारे विचार में लोक सभा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति की परंपरागत चित्र में प्राप्त वाणी है जिसमें लोक मानस संग्रहित रहता है। भाषा के आधार पर कह सकते हैं कि लोक साहित्य वह रचना अथवा वह अभिव्यक्ति है जिसका कोई रचनाकार नहीं होता है जो मौखिक परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरंतर चलती आ रही है जो कि जन पद के लोक जीवन और लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति जनपदीय बोली के माध्यम से की गई है। जिसे किसी शास्त्रीय सिद्धांतों का बंधन स्वीकार्य नहीं होता है वह सहज स्वच्छ जन मानस की अनुभूतियों का रूप है।

लोक साहित्य की विशेषताएं

- लोक साहित्य का रचनाकार अज्ञात होता है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी तक निरंतर चलता जाता है।
- लोक साहित्य जनपदीय या आम भाषा में लिखी गयी है जो लोक जीवन और लोक संस्कृति की झांकी को प्रस्तुत करता है।
- लोक साहित्य शास्त्रीय सिद्धांत छंद एवं बंधनों से मुक्त होता है।
- लोक साहित्य में कोई अकृत्रिम या आडंबर नहीं होता है वह सरल, सहज रूप में व्यक्त हुआ रहता है।
- लोक साहित्य आदिम सभ्यता का चित्रण है और उन्हीं की भावनाओं की अभिव्यक्ति है जो अपने समय के रीति रिवाज, संस्कारों को गीत या कथा के रूप में अभिव्यक्त हुई रहती हैं।
- लोक साहित्य में लोक जगजीवन, लोक संस्कृति, रूढ़ियों, परंपराओं, प्रथाओं, लोकविश्वास, व्रत व त्यौहारों, पर्वों, उत्सवों की प्रधानता होती है।
- लोक साहित्य स्वच्छंद विधान है इसमें बंधन या नियम नहीं रहते हैं। लोक साहित्य में लोक गीत लय, गेयता की प्रधानता होती है और यह जनपदीय बोली की शब्दावली को समेटे हुए रहता है।

लोक साहित्य के क्षेत्र एवं विधाएं

लोक साहित्य का क्षेत्र व्यापकता मानव के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत है यह स्त्री पुरुष बच्चे जवान वह बूढ़े सभी शो सभी लोगों की सम्मिलित संपत्ति है लोक साहित्य के विषय क्षेत्र में समग्र लोक जीवन लोक संस्कृति और लोक परंपरा प्रथाओं का समूह और जाता है इसका प्रचार-प्रसार कोटि-कोटि जन समुदाय तक होता आ रहा है लोक साहित्य क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसके अंतर्गत आर्थिक सामाजिक धार्मिक पौराणिक भाषा शास्त्री आदि सभी विषयों का समावेश रहता है लोक साहित्य में भौगोलिक तथा आर्थिक दशा का चित्रण प्राप्त होता है सम्मिलित होती है लोगों में लोगों के रहन-सहन आचार विचार खानपान लोक रीति त्यौहार धार्मिक आचरण आदि सम्मिलित रहते हैं।

लोक साहित्य के निम्नलिखित विधाएं हैं

- लोकगीत
- लोकनाट्य या जन नाटक
- लोक गाथा
- लोक कथा
- प्रकीर्ण सिहित्य -लोकोक्ति, मुहावरे और पहेलियां
- रासलीला

निष्कर्षत

हम कह सकते हैं कि लोक शब्द का प्रयोग उस जन समूह के लिए किया गया है जो साज-सज्जा, ऊपरीदिखावा, सभ्यता, शिक्षा, परिष्कार आदि से दूर आदि मानव मनोवृत्तियों वाला होता है। अंग्रेजी में इसे फ्लोक कहा गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, त्रिलोचन पांडे आदि कईयों ने इसको परिभाषित किया है। लोक साहित्य का क्षेत्र व्यापक है। यह किसी एक क्षेत्र में बंधा हुआ नहीं है। यह हमारे संपूर्ण समाज, जन समूह भौगोलिक तथा आर्थिक दशा का चित्रण है। लोक साहित्य में लोककथा, लोकगीत, रासलीला, लोकनाट्य, आदि सभी विधांए सम्मिलित है। इसमें प्रचलित लोकोक्तियां, मुहावरे भी आते हैं। लोक साहित्य के द्वारा नैतिकता की संस्कृति, आर्थिकता सामाजिक शिक्षा भी मिलती है। लोक साहित्य के द्वारा ही हमें चेतना व प्रेरक प्रसंगों की जानकारी भी मिलती है जिससे हमारी जीवन शैली में बदलावला सकते हैं लोक साहित्य के कोई रचनाकार नहीं रहते हैं लेकिन फिर भी इसके द्वारा समाज को एक अच्छा संदेश मिलता है। लोक साहित्य का अध्ययन करना उसको संग्रहित करके हमारे आगे की पीढ़ियों का उज्जवल भविष्य के लिए उन्हें सुनाना अत्याधिक आवश्यक है।

संदर्भ संकेत

1. लोक संस्कृति की रूपरेखा: डॉ कृष्णदेव उपाध्याय
2. साहित्य की महत्ता प्रेरक निबंध: महावीर प्रसाद द्विवेदी
3. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ सत्येंद्र
4. लोक साहित्य के सिद्धांत एवं परंपरा : डॉ श्री रामशर्मा , डॉ राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी